१. इतिहास किसे कहते हैं ?

१.१ इतिहास : भूतकाल की घटनाओं का ज्ञान कराने वाला विज्ञान

१.२ इतिहास की वैज्ञानिक पद्धति

१.३ इतिहास और हम

१.४ भूतकाल और भविष्यकाल

१.१ इतिहास : भूतकाल की घटनाओं का ज्ञान कराने वाला विज्ञान ।

पिछले वर्ष हमने चौथी कक्षा में छत्रपति शिवाजी महाराज के चरित्र और उनके द्वारा किए गए स्वराज्य स्थापना के कार्य का अध्ययन किया । शिवाजी महाराज के जन्म से पूर्व के समय का अर्थ आज से चार सौ वर्ष के पूर्व का समय होता है । इसी को हम चार सौ वर्ष 'प्राचीन' अथवा चार सौ वर्ष पूर्व का 'बीता हुआ' समय भी कह सकते हैं ।

हम अपने कार्य व्यापार की सुविधा की दृष्टि से समय का विविध पद्धति से विभाजन करते हैं । जब हम 'अभी', 'कुछ समय पहले', 'थोड़े समय के बाद'; अथवा 'आज', 'कल', 'परसों' इसी तरह 'इस वर्ष' 'अगले वर्ष' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं; तब जाने-अनजाने हम अपने मन में समय की गणना करते रहते हैं । इन शब्दों में 'अब', 'आज', 'इस वर्ष' आदि शब्दों द्वारा वर्तमानकाल का बोध होता है । 'कुछ समय पूर्व', 'कल', 'पिछले वर्ष' ये शब्द भूतकाल को दर्शाते हैं । 'थोड़े समय के बाद', 'कल', 'अगले वर्ष' आदि शब्दों द्वारा भविष्यकाल का बोध होता है । बीता हुआ समय भूतकाल कहलाता है । अभी जो समय चल रहा है; उसे वर्तमानकाल कहते हैं और भविष्यकाल को अभी आना है ।

भूतकाल में कई घटनाएँ घटित हो चुकी होती हैं । जैसे : यदि आज हमारी आयु दस वर्ष की है तो इसका अर्थ यह होता है कि हमारे जन्म की घटना भूतकाल में दस वर्ष पूर्व घटित हुई है । इसी भाँति दस वर्ष के बाद अर्थात भविष्य में हमारी आयु बीस वर्ष की होगी । हमारे जन्म

भूतकाल
जन्म
दस वर्ष पूर्व

वर्तमानकाल
हमारी आयु दस वर्ष है ।
आज

भविष्यकाल
हमारी आयु बीस वर्ष की होगी ।
दस वर्ष के बाद

के दिन से अब तक का अर्थात बीता हुआ समय हमारा अर्थात एक व्यक्ति के जीवन का भूतकाल कहलाता है ।

भूतकाल में घटित घटनाओं का जिस विज्ञान द्‌वारा हम बोध करते हैं; उसे 'इतिहास' कहते हैं ।

१.२ इतिहास की वैज्ञानिक पद्‌धति

तीसरी और चौथी कक्षा के परिसर अध्ययन विषय की पाठ्‌यपुस्तकों द्‌वारा हमारा विभिन्न विज्ञान शाखाओं से परिचय हुआ है । इन विज्ञान शाखाओं की विशेषता यह है कि किसी भी प्रमाण को प्रत्यक्ष प्रयोग के आधार पर बार-बार जाँचा जा सकता है । प्रत्येक प्रमाण का अलग-अलग निकषों पर परीक्षण करके वह विश्वसनीय है अथवा नहीं; यह निर्धारित करने की पद्‌धति को वैज्ञानिक पद्‌धति कहते हैं ।

यद्‌यपि हमें हमारे जन्म के बाद से घटित कई बातें मालूम नहीं होती हैं; फिर भी दादा जी - दादी जी, माता जी-पिता जी आदि हमारे रिश्तेदार हमारे बचपन की रोचक बातें बताते रहते हैं । ये सारी बातें उनकी यादों में बसी रहती हैं । एक ही बात की याद अलग-अलग लोग बताते रहते हैं । परिणामस्वरूप उनके बताने में थोड़ा-बहुत अंतर पाया जाता है । ऐसे समय हमारे सामने यह समस्या उत्पन्न होती है कि इनमें से कौन-सी बात एकदम सही है । तब यह निश्चित करने के लिए कि कौन-सी बात एकदम सही है ? बताई गईं बातों की सूक्ष्मता से जाँच करनी पड़ती है ।

भूतकाल की घटनाओं को जैसा का वैसा फिर से घटित करवाने का प्रयोग करना संभव नहीं होता है । अतः इतिहास को प्रस्तुत करने की पद्‌धति अन्य विज्ञान शाखाओं से भिन्न है । ऐसा होने पर भी इतिहास के प्रमाण को खोजने, जाँचने और तथ्यों के साथ उसका मिलान करने हेतु वैज्ञानिक पद्‌धति का ही अवलंब किया जाता है । इसके लिए आवश्यकतानुसार अन्य विज्ञान शाखाओं की सहायता ली जाती है । इसलिए इन सभी बातों पर विचार करते हुए कहा जाता है कि इतिहास एक विज्ञान है । इतिहास केवल कल्पना के आधार पर लिखा नहीं जाता ।

बरतन

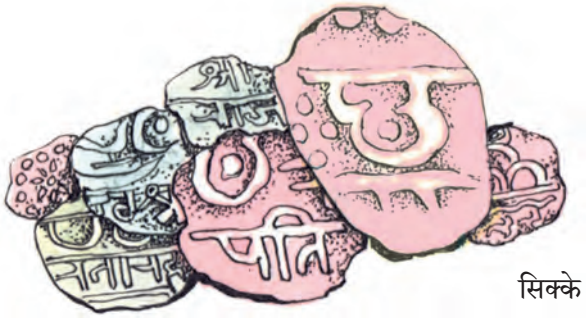

सिक्के

ताम्रपट

ग्रंथ और पांडुलिपियाँ

इतिहास के साधन

प्राचीन वस्तुएँ, भवन, शिल्प, बरतन, सिक्के, उकेरे हुए लेख, ताम्रपट, ग्रंथ, पांडुलिपियाँ, लोगों की स्मृति में बसी कथाएँ-कहानियाँ, लोकगीत आदि को 'इतिहास के साधन' कहते हैं । इन साधनों के भौतिक, लिखित और मौखिक ये तीन प्रकार बनते हैं । वास्तव में भूतकाल में क्या और कैसे घटित हुआ; यह खोजने के लिए इन साधनों द्‌वारा प्राप्त होने वाले प्रमाणों की सत्यता-असत्यता की कड़ाई से जाँच की जाती है । जाँच में सत्य सिद्‌ध हुए प्रमाणों को कालक्रम के अनुसार मिलाकर इतिहास लिखा जाता है । यही वैज्ञानिक पद्‌धति है ।

१.३ इतिहास और हम

विज्ञान का अध्ययन करने से हमें अनेक प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होते हैं । जैसे : पर्यावरण विज्ञान । पर्यावरण विज्ञान में पर्यावरण की हानि, प्रदूषण जैसी समस्याओं और उनपर किए जाने वाले उपायों का अध्ययन किया जाता है । वैसे ही प्रत्येक विज्ञान अपने-अपने विषय का अध्ययन करता है । इतिहास भूतकाल की घटनाओं का अध्ययन करता है ।

व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामूहिक कार्यों के परिणामस्वरूप मानवीय समाज की उन्नति हेतु या तो पोषक वातावरण का अथवा हानिकर वातावरण का निर्माण होता है । उसका प्रभाव हमारे प्रतिदिन के जीवन पर पड़ता रहता है । जैसे-जब किसी गाँव के लोग एकजुट होकर और एक-दूसरे के सहयोग से अपने उत्तरदायित्व पूर्ण करते हैं तब गाँव की उन्नति होती है; परंतु गाँव के लोगों में किसी कारण से एकजुटता न हो तो गाँव की उन्नति में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं ।

भूतकाल के मानवीय समाज के आचार-विचार और कार्यों के परिणामों की खोज करते हुए इतिहास अनेक प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ता है । इतिहास का अध्ययन करने से मानवीय समाज की उन्नति के लिए क्या अच्छा; क्या बुरा; इसका अध्ययन करना संभव होता है । इतिहास के अध्ययन द्‌वारा यह भी ध्यान में आता है कि वर्तमान समय में हमारा आचरण कैसा होना चाहिए जिससे हम अपने भविष्यकाल का निर्माण अच्छे ढंग से कर सकेंगे ।

भूतकाल के महान लोगों के चरित्र से स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करने का कार्य भी इतिहास करता है । इतिहास के माध्यम से हम अपनी एवं अन्य संस्कृतियों के बीच हुए आदान-प्रदान और मानवीय संस्कृति के विकास की यात्रा से अवगत होते हैं । इसी भाँति मानव की जीवन पद्‌धति में किस प्रकार परिवर्तन होते रहे; यह भी ध्यान में आता है ।

प्रत्येक गाँव, जिला, राज्य और देश का स्वतंत्र इतिहास होता है । इसी भाँति पृथ्वी, पर्वत, जलाशय, प्राणिजगत, मानव इन सभी का अपना स्वतंत्र इतिहास है ।

प्रत्येक विज्ञान शाखा का भी अपना इतिहास होता है । उसके आधार पर हमें मानवीय संस्कृति में महत्त्वपूर्व परिवर्तन लाने वाले अनेक वैज्ञानिक आविष्कारों और उनके आविष्कारकों की जानकारी प्राप्त होती है ।

१.४ भूतकाल और भविष्यकाल

विभिन्न घटनाओं की अखंडित शृंखला द्‌वारा भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल एक-दूसरे से जुड़े हुए होते हैं । जैसे : स्वतंत्रता प्राप्त करने हेतु भारतीयों ने अंग्रेजों के विरुद्‌ध संघर्ष किया; यह एक ऐतिहासिक घटना है । इसी के फलस्वरूप १५ अगस्त १९४७ को

भारत देश स्वतंत्र हुआ । अतः ऐसा कह सकते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति की घटना स्वतंत्रता संषर्घ की कृति का परिणाम है ।

हमारे आस-पास घटित होने वाली अनेक घटनाएँ भी ऐसे ही पूर्व समय में हमारे द्‌वारा की गईं गतिविधियों से जुड़ी हुई होती हैं । अतः हमें यह भी बोध होता है कि पूर्व समय में की गईं कृतियों पर भविष्यकाल निर्भर रहता है । इतिहास के अध्ययन द्‌वारा हम यह सीखते रहते हैं । जैसे-प्राचीन काल में मनुष्य ने आस-पास के परिसर में उपलब्ध सामग्री से औजार बनाने की कला को आत्मसात किया; अग्नि का उपयोग कैसे करना चाहिए; यह सीखा । आगे चलकर मनुष्य ने पहिये का आविष्कार किया ।

मनुष्य की आने वाली पीढ़ियों ने विकसित होती इन बातों में और वृद्‌धि की । मनुष्य की शारीरिक और बौद्‌धिक उन्नति के साथ-साथ तकनीकी विज्ञान का भी विकास होता गया । यह प्रक्रिया अभी भी अखंडित रूप में चल ही रही है । भूतकाल में हुए आविष्कारों के आधार पर ही भविष्य में नए आविष्कार करना संभव होता है ।

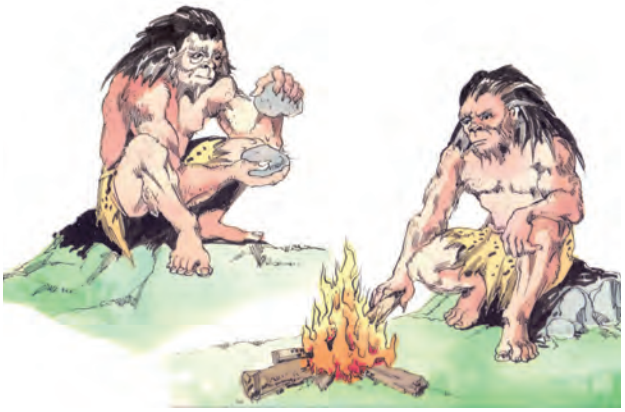

भूतकाल में हुए आविष्कार और तकनीकी विज्ञान

वर्तमानकाल में हुए आविष्कार और तकनीकी विज्ञान

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थान में उचित शब्द लिखो :

(अ) भूतकाल में घटित घटनाओं का जिस विज्ञान द्‌वारा हम बोध करते हैं; उसे -------- कहते हैं ।

(आ) इतिहास केवल -------- के आधार पर लिखा नहीं जाता ।

२. एक वाक्य में उत्तर लिखो :

(अ) वैज्ञानिक पद्‌धति किसे कहते हैं ?

(आ) स्वतंत्रता प्राप्ति की घटना किस कृति का परिणाम है ?

(इ) इतिहास का अध्ययन करने से क्या संभव हो जाता है ?

३. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो :

(अ) इतिहास यह विज्ञान है; ऐसा क्यों कहा जाता है ?

(आ) गाँव की उन्नति में बाधाएँ किस प्रकार उत्पन्न होती हैं ?

४. संकल्पनाचित्र बनाओ :

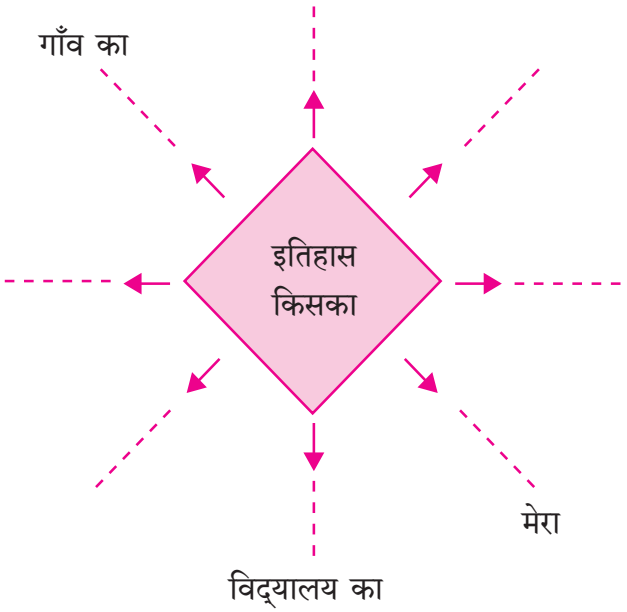

५. निम्न सारिणी में इतिहास के साधनों का वर्गीकरण करो :

इतिहास के साधन – सिक्के, पत्राचार, किले, गढ़, चक्की के गीत, बरतन, ताम्रपट, रजवाड़े शिलालेख, लोकगीत, स्तंभ, चरित्रग्रंथ, गुफाएँ, लोककथाएँ ।

भौतिक	लिखित	मौखिक

उपक्रम

(अ) अपने गाँव/परिसर के ऐतिहासिक भवनों, इमारतों और प्राचीन धार्मिक स्थलों की जानकारी और चित्रों का संकलन करो ।

(आ) अपने विद्यालय के इतिहास को जानने के लिए तुम किन साधनों का उपयोग करोगे; इसकी सूची बनाओ और लिखो कि उन साधनों के आधार पर तुम्हें कौन-सी जानकारी मिल सकेगी ।
जैसे - विद्यालय के शिलान्यास का पत्थर, विद्यालय की स्थापना, उद्घाटक आदि ।

क्या तुम यह जानते हो ?

पुरातत्त्व

विभिन्न मानव समाजों द्वारा भूतकाल में निर्मित अनेक वस्तुओं और भवनों/इमारतों के अवशेष अलग-अलग स्थानों पर देखने को मिलते हैं । उनमें से सभी जमीन पर होते हैं; ऐसा नहीं है । कई वर्षों से लगातार आती बाढ़ द्वारा वहन कर लाई गई काँप की मिट्टी की अथवा पवन द्वारा लाई गई मिट्टी की परतें जमकर उनके नीचे कुछ अवशेष दब जाते हैं । मानव द्वारा निर्मित वस्तुओं, भवनों/इमारतों; इसी तरह मानव एवं प्राणियों के कंकालों के अवशेष भी ऐसे ही दबे हुए होते हैं । ऐसे अवशेषों को 'पुरावशेष' कहते हैं । 'पुरा' का अर्थ पुराना अथवा प्राचीन होता है ।

भूतकाल की वस्तुओं और भवनों/इमारतों तथा उनके अवशेषों के आधार पर घटित घटनाओं को जिस वैज्ञानिक पद्धति से प्रस्तुत किया जाता है, उस विज्ञान को 'पुरातत्त्व विज्ञान' कहते हैं । प्राचीन अवशेष खोजने और उनका अध्ययन करने का कार्य पुरातत्त्व विशेषज्ञ करते हैं । भूमि के नीचे दबे हुए अवशेषों को प्रकाश में लाने हेतु भूमि की एक-एक परत की अत्यंत वैज्ञानिक पद्धति से जाँच करते हुए बहुत ही सावधानी से खनन किया जाता है । इस प्रकार खनन करने की प्रक्रिया को 'पुरातत्त्वीय उत्खनन' अथवा 'खुदाई' कहते हैं । जहाँ पुरावशेष पाए जा सकते हैं; ऐसे स्थानों की पहले खोज की जाती है । उनका व्यवस्थित अंकन किया जाता है । इसके पश्चात जिस स्थान पर उत्खनन करना है; उसका नियोजन किया जाता है ।

उत्खनन में पाए गए अवशेषों का अध्ययन करते समय पुरातत्त्व विशेषज्ञ कई प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करते हैं । जैसे :

१. पाए गए अवशेष किस कालखंड के हैं ?
२. वे अवशेष किस सभ्यता/संस्कृति के हैं ?
३. उस सभ्यता/संस्कृति के लोगों का दैनिक जीवन का स्वरूप कैसा था ?
४. अन्य सभ्यता/संस्कृति के लोगों के साथ उन लोगों के संबंध किस स्वरूप के थे ?
५. अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु वे लोग अपने परिसर के प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किस प्रकार कर लेते थे ?

❑❑❑